श्री मल्लिनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री मल्लिनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.- 9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री मल्लिनाथ विधान

जय बोलिये

मोहमल्ल विजयी,
अष्टकर्म जयी,
शल्यों के हारी,
शूलों के विदारी,
सिद्ध स्वरूपा, आतम भूपा,
चिन्मय रूपा, श्री चिद्रूपा,
परम तपस्वी, पूज्य यशस्वी,
परम ओजस्वी!, परम तेजस्वी!
परमपूज्य
श्री मल्लिनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : देवा, ओ गुरुदेवा.....)

नैया.... हो मेरी नैया[2]
हो मेरी नैया का कोई खिवैया नहीं।
मल्लि जिनवर सा कोई तिरैया नहीं॥ तिरैया... नैया....

तुम ही मेरे पिता माता भैया।
मैंने सौंपी तुम्हें अपनी नैया॥
अर्जी मेरी रही, मर्जी तेरी रही,
फिर भी थामो क्यों तुम मेरी नैया नहींऽऽऽ- नैया नहीं....।

मेरी नैया अगर जो डूबेगी।
तेरी दुनियाँ में हँसी तो उड़ेगी॥
नैया करवा दो पार, होगा बड़ा उपकार,
तुम बिन मेरा तो कोई बचैया नहींऽऽऽ.... बचैया नहीं...।

सारी दुनियाँ के ओ! तारणहारे।
मेरी आतम तुम्हीं को पुकारे॥
मुझको दे दो तुम साथ, सिर पर रख दो तुम हाथ,
वीतरागी सा कोई पार लगैया नहींऽऽऽ... लगैया नहीं...।

दुर्लभ जीवन है जल बुद्-बुद् जैसा।
जैसा रचवा दो रच जाए वैसा।
'सुव्रत' पूजें चरण, ले लो अपनी शरण,
तुम-सा मुक्ति महल का रचैया नहींऽऽऽ... रचैया नहीं...।

श्री मल्लिनाथ विधान

स्थापना

(दोहा)

होकर जो आत्मस्थ भी, रहें चराचर व्याप्त।
दृष्टा हर व्यापार के, फिर भी निःसंग आप्त॥
ऐसे मल्लिनाथ प्रभु, दूजे बाल यतीश।
पुराण पुरुष परमेश को, सविनय टेकें शीश॥

(लय : जीवन है पानी की बूँद....)

मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाये रे।[2]
द्रव्यों की थाली (हाँ-हाँ)[2] हम आज सजाये रे॥
नाथ! आप सब देखो पर, कौन आपको देख सके।
नाथ! आप सब जानो पर, कौन आपको जान सके॥

अतः आपकी खुद महिमा, हम भक्तों से तो न हुई।
सो दर्शन पूजा वाली, अन्तस्-भाव वर्गणा हुई॥
काल अनन्त व्यर्थ खोया, पर-तत्परता लौ लागी।
किन्तु आपके दर्शन से वीतरागता सी जागी॥

पूजन में आओ! (हाँ-हाँ)[2], हम भक्त बुलाये रे..
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाये रे।[2]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं....)

इतने जन्म लिए हमने, पर सम्यक् न जन्म सके।
इतने मरण किए हमने, लेकिन सम्यक् मर न सके॥
जन्म-मरण प्रभु के जैसे, करके शुद्धातम पायें।
अतः भक्ति श्रद्धा जल ले, करें नमोस्तु गुण गायें॥

जीना अरु मरना, (हाँ-हाँ)^2, हम हरने आये रे।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाये रे।^{2}

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जलं.....।

खस चन्दन से अतिशीतल, कुछ भी मिल ना पायेंगे।
देह ताप को किन्तु वही, और अधिक धधकाएँगे॥
अतः आप सम त्याग इन्हें, समता निज रस को पायें।
अतः समर्पित चंदन कर, करें नमोस्तु गुण गाएँ॥
जलना भव तपना (हाँ-हाँ)^2, हम हरने आये रे।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाये रे।^{2}

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

सकल विश्व हम जान रहे, पर निज से अनजान रहे।
अक्षयपुरवासी होकर, नश्वर अपना मान रहे॥
हमें भेद-विज्ञान मिले, सिद्ध क्षेत्र प्रभु सा पायें।
अतः समर्पित अक्षत कर, करें नमोस्तु गुण गायें॥
तृष्णा भव मूर्च्छा (हाँ-हाँ)^2, हम हरने आये रे।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाये रे।^{2}

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

कैसे आप विरागी हो, कैसे पर के त्यागी हो।
बनकर बालब्रह्मचारी, मुक्तिवधू के रागी हो॥
कालजयी, हे! कामजयी, तुम पर हम भी ललचाएँ।
अतः समर्पित पुष्प करें, करें नमोस्तु गुण गायें॥
पर की आसक्ति (हाँ-हाँ)^2, हम हरने आये रे।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाये रे।^{2}

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

पर-रस सरस अरस हों पर, आतम सदा रसीला हो।
जले गले ना सड़े कभी, रात्रि त्याग ना इसका हो॥

रस त्यागी निज के रसिया, कैसे तुमको हम पाएँ।
अतः भेंट नैवेद्य करें, करें नमोस्तु गुण गायें॥
काया भव व्याधि (हाँ-हाँ)^2, हम हरने आये रे।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाये रे।^{2}

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

नाथ! आपकी निज ज्योति, हम भक्तों से ना होती।
सूरज चंदा की ज्योति, दीप ज्योति से क्या? होती॥
केवल तुम्हें निरख कर हम, अपने नयन सफल पायें।
अतः आरती दीप जला, करें नमोस्तु गुण गाएँ॥
मोही भव गलियाँ (हाँ-हाँ)^2, हम हरने आये रे।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाये रे।^{2}

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

अच्छा बुरा करो कुछ भी, कुछ तो लोग कहेंगे ही।
त्याग तपस्या अतः करो, लोग विरोध करेंगे ही॥
करो साधना चुपके से, शोर आप खुद हो जायें।
अतः सुगन्धी खेकर हम, करें नमोस्तु गुण गायें॥
कर्मों के शत्रु (हाँ-हाँ)^2, हम हरने आये रे।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाये रे।^{2}

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

सुख-दुख की परवाह न की,निज-कर्त्तव्य निभाये तुम।
लाख आँधियों संकट में, पथ से चिग ना पाये तुम॥
उपादान को निमित्त से, तुम सम हम भी प्रकटायें।
अतः भेट फल निजफल को, करें नमोस्तु गुण गायें॥
सुख-दुख भव पीड़ा (हाँ-हाँ)^2, हम हरने आये रे।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाये रे।^{2}

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

भक्ति नमोस्तु पूजन में, झुकना धर्म सिखाता है।
झुका-झुकाकर भक्तों को, स्वयं उच्च कहलाता है॥
जो झुकते वे उठते हैं, बिना झुके क्या उठ पाएँ।
अतः मोक्ष तक उठने को, भक्त अर्घ ले झुक जाएँ॥
दूरी-मजबूरी (हाँ-हाँ)[2], हम हरने आये रे।
मल्लिप्रभु की पूजा करने, भाव बनाये रे।[2]

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

चैत्र शुक्ल एकम् पुजी, जब तज स्वर्ग विमान।
प्रभावती के गर्भ में, वसे मल्लि भगवान॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, जन्मे मल्लि जिनंद।
कुम्भराज गृह राज्य में, शोर-बुलौआ-नंद॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

चंचल बिजली की चमक, जन्म तिथी में देख।
मल्लिप्रभु दीक्षित हुए, जिन्हें नमन सिर टेक॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण की दूज में, पाए प्रभु कैवल्य।
मल्लिप्रभु तीर्थेश को, नमन हरे अब शल्य॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पाँचे फागुन शुक्ल में, मोक्ष मल्लिप्रभु पाए।
शाश्वत संबलकूट को, हम तो शीश झुकाए॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपञ्चम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जग में पूज्य विशेष हैं, मल्लिनाथ योगीश।
जयमाला के नाम से, मिले हमें आशीष॥
कर्म-शरण संसार दे, धर्म-शरण दे तार।
पाने शरण विशेष अब, आए प्रभु के द्वार॥

(ज्ञानोदय)

ज्यों विशाल-तन गज-झुंडों पर, एक शेर बस कर ले जय।
जैसे घोर अँधेरे को भी, लघु दीपक ही कर दे क्षय॥
नाग-पाश ज्यों मोर-कूक से, ढीले पड़कर हुए विलय।
मल्लिप्रभु त्यों मोह-मल्ल की, शल्य हरें सो बोलो जय॥ 1॥
एक वैश्रवण राजा देखे, जब बरगद का पेड़ गिरा।
जब इतना मजबूत गिरा तो, अपना तो हो हाल बुरा॥
इसी दृश्य से हो वैरागी, राज रमा जग छोड़ गए।
मुनि बन तीर्थंकर प्रकृति धर, कर सल्लेखन स्वर्ग गए॥ 2॥

स्वर्ग त्याग मिथिला नगरी के, राजा कुम्भ बड़े प्यारे।
जिनकी प्रजावती रानी को, देकर स्वप्न जन्म धारे॥
गर्भ जन्म कल्याणक विधि से, मल्लिनाथ यह नाम रखा।
सौ वर्षों का कुमारकाल जब, बीता तो सब नगर सजा॥ 3॥

तभी याद आयी स्वर्गों की, कहाँ त्याग का फल पावन।
और कहाँ? यह लज्जादायक, बिडम्बना विवाह बन्धन॥
ऐसे विवाह की निन्दा कर, दीक्षा का उद्योग किया।
तब लौकान्तिक देवों ने आ, अनुमोदन सहयोग किया॥ 4॥

अहो! अहो! कौमार्य दशा में, नर-इन्द्रों को जो दुष्कर।
वही विषय तज चले श्वेत-वन, बैठ जयन्त पालकी पर॥

''प्रशान्तरूपायदिगम्बराय'' को, धरा ''नमः सिद्धेभ्यः'' कह।
हुई पारणा मिथिलानगरी, नंदिषेण राजा के गृह॥ 5॥

बस छह दिन छद्मस्थ बिताकर, अशोक तरु-तल थित होकर।
बेला कर, हर घाति-कर्म को, बने केवली तीर्थंकर॥
अट्ठाईस गणधर से शोभित, समवसरण में दिशा दिए।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, मोक्ष स्वयं को दिला दिए॥ 6॥

जनम-मरण की जहाँ तरंगें, भँवरे इच्छा की रखता।
भवसागर दुख जल से पूरित, मिथ्या चंदा से बढ़ता॥
मल्लिप्रभु ने देह रूप इस, मगरमच्छ को तज करके।
ध्यान नाव से भवसागर को, तैरा मोक्ष प्राप्त करके॥ 7॥

तब ही पद्म चक्रवर्ती अरु, नन्दिमित्र बलदेव हुए।
तब बलीन्द्र प्रतिनारायण भी, नारायण तब दत्त हुए॥
जिनका नाम मोह ग्रह हर ले, फिर क्या बात केतु ग्रह की।
अतः नमोस्तु मल्लिनाथ को, जो दें राह मोक्षगृह की॥ 8॥

धर्मोदय के तप-मधुवन के, आप रहे तोता-मिट्ठू।
काव्य कला के नन्दनवन के, आप रहे कोकिल किट्टू॥
चरित-मल्लिका के तुम भँवरे, पुण्य कमल सरवर हंसा।
तुम्हें पूजकर निज-भूषण हो, हम भक्तों की यह मंसा॥ 9॥

स्वर्ग मोक्ष सुख के इच्छुक जन, सब वास्तव में दुखी रहें।
मल्लिप्रभु बिन ज्ञानी ध्यानी, कौन तपस्वी सुखी रहें॥
किन्तु भक्त जो मल्लि प्रभु के, वचन सुनें चारित्र धरें।
स्वर्ग मोक्ष यूँ ही पाते वे, जीवन आत्म पवित्र करें॥ 10॥

अतः आपसे एक प्रार्थना, हम भक्तों की है स्वामी।
सोकर उठें आँख जब खोलें, तो दर्शन देना स्वामी॥

सब मंगल में पहला मंगल, जिन-दर्शन स्वीकारा है।
सर्व सिद्धि 'सुव्रत' की होगी, यदि सान्निध्य तुम्हारा है॥ 11॥

(सोरठा)

कलश चरण में चिह्न, मल्लिनाथ प्रभु नाम है।
आतम मिले अभिन्न, इससे सदा प्रणाम है॥
हे निर्मोही! आप्त, करो एक हम पर नजर।
दुख गम करो समाप्त, कालसर्प-भवयोग हर॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं....।

(दोहा)

मल्लिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, मल्लिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

विधान अर्घ्यावली

(सम्यग्दर्शन की पाँच लब्धि वर्णन) (हरीगीतिका)

बढ़ती विशुद्धि आत्म की जब, हीन पापोदय हुए।
संज्ञी बने हित दृष्टि से, सम्यक्त्व के काबिल हुए॥
ये रेल पहियों सम क्षयोपशम-लब्धि सब जन उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 1॥

ॐ ह्रीं कर्म पापोदयनाशक विवेकदृष्टिदायक क्षायोपशमिकलब्धिविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो पुण्य आदि प्रशस्त बंधन, के लिए परिणाम हों।
जिससे असाता कष्ट नशते, प्राप्त साता कर्म हों॥
सिगनल सफाई सी विशुद्धि-लब्धि सब जन उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 2॥

ॐ ह्रीं असाताकर्मनाशक साताभावदायक विशुद्धिलब्धिविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

गुरु के वचन सुन तत्त्व आदिक, ज्ञान के उपवन खिलें।
उस पर मनन कर अर्थ से, सम्यक्त्व के कारण मिलें॥
ये हॉर्न जैसी देशना की, लब्धि सब जन उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 3॥

ॐ ह्रीं गुरु उपदेशामृतदायक देशनालब्धिविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

बिन आयु अन्तः कोड़ाकोड़ि, कर्म की थिति कर सकें।
अनुभाग अशुभों में कमी से, योग्यता कुछ धर सकें॥
पेट्रोल सम प्रायोग्यलब्धि, शीघ्र सब जन उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 4॥

ॐ ह्रीं अशुभकर्मप्रभावनाशक प्रायोग्यलब्धिविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.।

जिस भाव से सम्यक्त्व होता, वो करणलब्धि कही।
प्रतिपल अनन्तों गुण विशुद्धि, जो अभव्यों में नहीं॥
चाबी समा ये करणलब्धि, भव्य सब जन उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 5॥

ॐ ह्रीं उत्तमपरिणामदायक करणलब्धिविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(सम्यग्दर्शन के 5 अतिचार)

जिनदेव द्वारा कथित श्रुत में, जो करें संदेह को।
या सप्त भय से भीत होकर, पा रहे दुख-देह को॥
सम्यक्त्व को करता मलिन जो, नाश वह शंका करें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 6॥

ॐ ह्रीं शङ्कानाशक निःशङ्कितभावविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

इस जन्म में पर जन्म में जो, चाहते भव-भोग को।
इस चाह से भव-दाह से, उनको न आतम योग हो॥
सम्यक्त्व को करता सदोषी, नाश वह कांक्षा करें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 7॥

ॐ ह्रीं कांक्षानाशक निःकांक्षितभावविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

रत्नत्रयी जो शुद्ध हैं पर, बाह्य तन पर मैल हों।
अथवा दुखी दारिद्र्य जन को, ग्लानि के जो भाव हों॥
सम्यक्त्व का अतिचार यह, हम नाश विचिकित्सा करें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 8॥

ॐ ह्रीं घृणानाशक निर्विचिकित्साभावविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तप ज्ञान मिथ्यादृष्टियों का देख अच्छा मन कहे।
ये अन्यदृष्टि की प्रशंसा नाम के अवगुण रहे॥
सम्यक्त्व को मैला करे यह, त्याग आत्मार्थी करें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 9॥

ॐ ह्रीं अन्यदृष्टिप्रशंसानाशक गुणप्रशंसाविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मिथ्यात्व के तप ज्ञान आदिक, वाक्य से कहना भले।
ये अन्यदृष्टि संस्तवों का दोष आतम में पले॥
सम्यक्त्व का यह दोष जल्दी, त्याग मोक्षार्थी करें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 10॥

ॐ ह्रीं अन्यदृष्टिसंस्तवनाशक जिनसंस्तवविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(व्रतों की 25 भावनाएँ)

मन की शुभाशुभ तज प्रवृत्ति, तो अहिंसा पल सके।
ये ही मनोगुप्ति सँभारें, आत्म तब ही मिल सके॥
प्यारे अहिंसाव्रत धरम की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 11॥

ॐ ह्रीं मनोविकारनाशक मनोगुप्ति अहिंसाव्रतभावनाविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

छोड़ो शुभाशुभ बोलना तो, जीव की करुणा पले।
ये ही वचनगुप्ति सँभारें, शुद्ध आतम तब मिले॥
प्यारे अहिंसाव्रत धरम की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 12॥

ॐ ह्रीं वचनविकारनाशक वचनगुप्ति अहिंसाव्रतभावनाविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बस चार हाथों की नजर रख, देख कर भू पर चलें।
ये ही रही है ईर्यासमिति, इस दया से चित खिलें॥
प्यारे अहिंसाव्रत धरम की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 13॥

ॐ ह्रीं यातायातविकारनाशक ईर्यासमिति अहिंसाव्रतभावनाविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो भूमि पर रखना उठाना, देखकर हर वस्तुएँ।
आदाननिक्षेपणसमिति वो, धर दया अन्तर छुएँ॥
प्यारे अहिंसाव्रत धरम की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 14॥

ॐ ह्रीं विनिमयविकारविनाशक आदाननिक्षेपणसमितिविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

लो अन्न-जल तो शोध करके, सूर्य के आलोक में।
आलोकभोजनपानसमिति, नित्य पुजती लोक में॥
प्यारे अहिंसाव्रत धरम की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥15॥

ॐ ह्रीं शुद्धि विकारविनाशक आलोकितपानभोजनसमितिविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जब क्रोध हो तो सत्य क्या सो त्यागना ही क्रोध को।
ये क्रोध प्रत्याख्यान करके संत पाते बोध को॥
ये सत्यव्रत की भावना जो, आत्म ध्याता उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 16॥

ॐ ह्रीं असत्यविकारविनाशक क्रोधप्रत्याख्यानविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जब लोभ हो तो सत्य क्या सो, त्यागना ही लोभ को।
ये लोभ प्रत्याख्यान करके, संत हरते क्षोभ को॥
ये सत्यव्रत की भावना जो, आत्म ध्याता उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 17॥

ॐ ह्रीं लोभविकारविनाशक लोभप्रत्याख्यानविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

भीरुत्व हो तो सत्य क्या सो, त्यागना भयभीत को।
भीरुत्व प्रत्याख्यान करके आत्म से मुनि प्रीत हो॥
ये सत्यव्रत की भावना जो, आत्म ध्याता उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 18॥

ॐ ह्रीं भय विकारविनाशक भीरुत्वप्रत्याख्यानविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जब हास्य हो तो, सत्य क्या सो, त्यागना ही हास्य को।
ये हास्य प्रत्याख्यान करके, धार लो संन्यास को॥
ये सत्यव्रत की भावना जो, आत्म ध्याता उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 19॥

ॐ ह्रीं हास्य विकारविनाशक हास्यप्रत्याख्यानविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शास्त्रोक्त ही निर्दोष बोलो, या धरो सब मौन को।
अनुवीचि-भाषण से समझ लो, विश्व में तुम कौन हो॥
ये सत्यव्रत की भावना जो, आत्म ध्याता उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 20॥

ॐ ह्रीं वाणीविकारविनाशक अनुवीचिभाषणविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पर्वत गुफा तरु-कोटरों में, और निर्जन धाम में।
ये वास शून्यागार धरकर, लीन हों निज ध्यान में॥
ये भावना हि अचौर्यव्रत की, सन्त जैसी हम धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 21॥

ॐ ह्रीं वन विकारविनाशक शून्यागारवासविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

छोड़े हुए महलों किलों में, या गृहों में वास हो।
यह है विमोचित वास इससे, नाश लो उपहास को॥
ये भावना हि अचौर्यव्रत की, सन्त जैसी हम धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 22॥

ॐ ह्रीं आवासविकारविनाशक विमोचितावासविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तुम हो जहाँ ठहरे वहाँ पर, रोकना नहिं अन्य को।
ऐसे परोपरोधाकरण से, चेतना भी धन्य हो॥

ये भावना हि अचौर्यव्रत की, सन्त जैसी हम धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 23॥

ॐ ह्रीं विरोधविकारविनाशक परोपरोधाकरणविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हो शास्त्र के अनुसार भोजन, शुद्धि से भिक्षा करें।
ये भैक्ष्यशुद्धि प्राप्त करके, शुद्ध जिनदीक्षा करें॥
ये भावना हि अचौर्यव्रत की, सन्त जैसी हम धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 24॥

ॐ ह्रीं आहारशुद्धिविकारविनाशक भैक्ष्यशुद्धिविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सहधर्मियों से कलह करना, धर्म को दागी करे।
सहधर्म-अविसंवाद यह जो, चित्त वैरागी करे॥
ये भावना ही अचौर्यव्रत की, सन्त जैसी हम धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 25॥

ॐ ह्रीं वाद विवादविकारविनाशक सधर्माविसंवादविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ऐसी कथाएँ जो बढ़ाये, नारियों में राग को।
वह स्त्रीरागकथा श्रवण का, साधुओं का त्याग हो॥
यह ब्रह्मचारी श्रेष्ठ व्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥26॥

ॐ ह्रीं स्त्रीरागविकारविनाशक स्त्रीरागकथाश्रवणत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय.....।

हो देखने का त्याग सुन्दर, नारियों के अंग को।
वह तन्मनोहरांग निरीक्षण, त्याग से सत्संग हो॥
यह ब्रह्मचारी श्रेष्ठ व्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 27॥

ॐ ह्रीं अङ्गोपाङ्गविकारविनाशक तन्मनोहराङ्गनिरीक्षणत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय.....।

अव्रत दशा में भोग भोगे, याद उनकी छोड़ दो।
पूर्वरतानुस्मरण त्याग से, शीघ्र सुव्रत धार लो॥
यह ब्रह्मचारी श्रेष्ठ व्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 28॥

ॐ ह्रीं भोगविषयविकारविनाशक पूर्वरतानुस्मरणत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय.....।

तज इष्ट और गरिष्ट रस जो, काम का वर्धन करें।
वृष्येष्टरस का त्याग करके, पुण्य का अर्जन करें॥
यह ब्रह्मचारी श्रेष्ठ व्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 29॥

ॐ ह्रीं रसविकारविनाशक वृष्येष्टरसत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संस्कार अपनी देह के, सजने सँवरने के तजो।
स्वशरीरसंस्कारत्याग से, स्वरूप शृंगारित भजो॥
यह ब्रह्मचारी श्रेष्ठ व्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 30॥

ॐ ह्रीं शृंगारविकारविनाशक स्वशरीरसंस्कारत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

अच्छे बुरे परसन विषय में, राग हो ना दोष हो।
त्रय योग से समता सँभालो, ध्यान-मुद्रा शेष हो॥
उत्तम परिग्रहत्यागव्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 31॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनविकारविनाशक स्पर्शनेन्द्रियविषयराग द्वेषत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कड़वे मधुर आदिक रसों में, राग हो ना द्वेष हो।
पाँचों तरह रसना विषय में, साम्य अमृत भेष हो॥
उत्तम परिग्रहत्यागव्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 32॥

ॐ ह्रीं रसनाविकारविनाशक रसनेन्द्रियविषयराग द्वेषत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दुर्गन्ध या शुभ गन्ध को अच्छा-बुरा कुछ ना कहो।
धर घ्राण के विषयों में समता, आत्म सौरभ में रमो॥
उत्तम परिग्रहत्यागव्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 33॥

ॐ ह्रीं घ्राणविकारविनाशक घ्राणेन्द्रियविषयराग द्वेषत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो चक्षु के पाँचों तरह के, वर्ण में समता धरे।
वो पुद्गलों के भाव तज के, आत्म निर्मलता करे॥
उत्तम परिग्रहत्यागव्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 34॥

ॐ ह्रीं नेत्रविकारविनाशक चक्षुरिन्द्रियविषयराग द्वेषत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो कर्ण के सातों सुरों में, साम्य नित ही धारता।
साधक सुरासुर से पुजे, संसार भी वह तारता॥
उत्तम परिग्रहत्यागव्रत की, भावना हम उर धरें।
तब ही नमोस्तु मल्लिप्रभु को, भक्ति से हम सब करें॥ 35॥

ॐ ह्रीं कर्णविकारविनाशक कर्णेन्द्रियविषयराग द्वेषत्यागविधायक श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

जो चाहते दर्शन उन्हें प्रभु आप दर्शन दीजिए।
जो पूजते तुमको, उन्हीं पर, शीघ्र करुणा कीजिए॥
जो माँगते शरणा तुम्हारी, शरण उनको लीजिए।
जो खोजते हैं मोक्ष उन पर, प्रभु दया कर दीजिए॥
है मल्लिप्रभु को अर्घ अर्पित, भावना केवल यही।
बस दो दिनों की जिंदगी यह, भक्त की कर दो सही॥
हों जन्म-मृत्यु फूल जैसे, जिन्दगी हो इत्र सी।
झट भक्त-भगवन् के मिलन को, है नमोस्तु भक्त की॥

(दोहा)

निज से निज की भेंट को, अर्घ भेंट है आज।
कृपा करो हम भक्त पर, मल्लिनाथ जिनराज॥
ब्रह्म रमण की साधना, मल्लिप्रभु दें दान।
ऐसे परम जिनेश के, चरण पड़ें धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं समस्तविध आत्मविकारविनाशक त्यागवैराग्यभावनाविधायक श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

मल्लिप्रभु इस विश्व को, हर पल रहे उदार।
आतम ज्ञान प्रकाश से, हरें पाप अँधयार॥
भय को जो कर दें अभय, पतितों को लें धाम।
उनकी महिमा क्या कहें, हम तो करें प्रणाम॥

(पंचचामर)

द्वितीय बाल ब्रह्म के यतीश मल्लिनाथ हैं।
उनीशवे जिनेन्द्र शुद्ध-आत्मलीन आप हैं॥
विराग वीतराग के महान् उच्च धाम हो।
अतः स्वरूप प्राप्ति को तुम्हें सदा प्रणाम हो॥ 1॥

विभाव से हटे हुए स्वभाव में रमे हुए।
अभाव से दुखी नहीं, प्रभाव में जमे हुए॥
दबाव से दबाव में तुम्हें दबाव है नहीं।
झुकाव आपके लिए सही दवा बने वही॥ 2॥

विचार ही स्वभाव है विचार ही विभाव है।
यही विचार आपका महान ही सुझाव है॥
यही विचार आत्म में अनादि से अनंत है।
दिगम्बरी यही विचार शुद्ध जैन-पंथ है॥ 3॥

विचार ही बुराई है, विचार ही भलाई है।
विचार स्वर्ग-मोक्षधाम और नर्क खाई है॥
विचार शत्रु मित्र बंधु अन्य खिन्न-भिन्न हैं।
विचार से सुखी दुखी विचार से प्रसन्न हैं॥ 4॥

यही विचार आपने निजात्म में विचार के।
विहार मोक्ष को किया विचार को सुधार के॥
अनादि की परम्परा कुधर्म की विनाश दी।
सुधर्म पाँच लब्धियाँ मिली निजी विकास की॥ 5॥

सदोष कोश आत्म रत्न को किए विशुद्ध हैं।
सदैव भावना किए अतः बने प्रसिद्ध हैं॥
प्रसिद्धि देख आपकी हमें सुसिद्धि भा गयी।
तुम्हें निहार के हमें स्व-आत्म याद आ गयी॥ 6॥

विचार के सुधार को रचा रहे उपासना।
भवाब्धि-वर्त वर्तना, हरो यही सु-प्रार्थना॥
हमें कभी विचारभाव धर्म के मिले नहीं।
तभी गुलाब आत्म में स्वभाव के खिले नहीं॥ 7॥

दया करो कृपा करो हरो विभाव भ्रान्तियाँ।
तभी विनाश हो सकें, अनंत कर्म ग्रन्थियाँ॥
यहाँ न आप आइए, हमें बुलाइए वहाँ।
सदा रहे जिनेन्द्र देव आपकी कृपा जहाँ॥ 8॥

हमें न दीन भाव से दया प्रदान कीजिए।
समानता स्वभाव से हमें समान कीजिए॥
गरीब के नसीब को गरीब क्या बनाओगे।
विचार तो सुधार दो हमें करीब पाओगे॥ 9॥

(सोरठा)

रिद्धि सिद्धि उपहार, पाकर निज बगिया खिले।
'सुव्रत' करें पुकार, निज स्वभाव हमको मिले॥
अतः किया गुणगान, मल्लिनाथ भगवान् जी।
हो स्वीकार प्रणाम, कर देना कल्याण भी॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

मल्लिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, मल्लिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री मल्लिनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

है 'बामौर कलाँ' जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
वहीं काव्य पूरा हुआ, मल्लिनाथ विधान॥
दो हजार चौदह गुरु, दूजी सत्ताबीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : हे शारदे माँ....)

ज्योति जला के, लखो मूर्ति को।
मल्लिप्रभु की, सदा आरती हो॥

तुम कुम्भ राजा के, राज दुलारे।
प्रजावती रानी के, नयनों के तारे॥
मिथिला के स्वामी, मुक्ति पथी हो।
मल्लिप्रभु की ...॥ 1॥
जिसमें ही सम्पूर्ण ये विश्व उलझा।
तुमने वो निस्सार संसार समझा॥
समझ के न उलझे बने जिन-पथी हो।
मल्लिप्रभु की ...॥ 2॥
तुम्हें खोजते हम तो पहुँचे यहाँ पर।
तुम्हीं न सँभालो तो जायें कहाँ पर॥
सर्वोपकारी तुम्हीं महारथी हो ।
मल्लिप्रभु की ...॥ 3॥
अगर आसरा तुम दे दो चरण का।
तो पूरा हो सपना मुक्ति वरण का॥
करुणा तुम्हारी हमें तारती हो ।
मल्लिप्रभु की ...॥ 4॥
ये दौलत हमारी बदौलत तुम्हारी।
बिना आपके क्या हो हालत हमारी॥
'सुव्रत' को पथ दो, ओ! सारथी हो ।
मल्लिप्रभु की ...॥ 5॥